इकाई–9
व्यावहारिक मनोविज्ञान

इस अध्याय को पढने के बाद आप

- व्यावहारिक मनोविज्ञान के अर्थ को समझ सकेगें।
- मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोगों को जान सकेगें।
- शिक्षा, सम्प्रेषण तथा संगठन मनोविज्ञान के महत्व को समझ सकेगें।
- खेलों में मनोविज्ञान के महत्व को जान सकेगें।

परिचय

व्यावहारिक या प्रयुक्त मनोविज्ञान का तात्पर्य ऐसे मनोविज्ञान से है जो क्षेत्र में व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए उनका सही मार्ग दर्शन करने के लिए, मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाधान में अपने कौशल एवं शोध का उपयोग करते हैं। वस्तुतः मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग करना ही व्यावहारिक मनोविज्ञान है।

व्यावहारिक मनोविज्ञान का अर्थः– व्यावहारिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो का प्रयोग कर विभिन्न मानवीय समस्याओं को सुलझाया जाता है। व्यावहारिक मनोविज्ञान भिन्न ना होकर, मनोविज्ञान की ही एक शाखा है। हैपनर ने इसे परिभाशित करते हुए बताया कि ''व्यावहारिक मनोविज्ञान के लक्ष्य मानव क्रियाओं का वर्णन भविश्य और मानव क्रियाओं का नियन्त्रण है जिससे हम अपने जीवन को बुद्धिमतापूर्वक समझ सकें।'' जिस प्रकार विज्ञान में दो पहलु सम्मिलित होते हैं सैद्धांतिक और व्यावहारिक ठीक उसी प्रकार मनोविज्ञान में भी सैद्धांतिक के साथ–साथ व्यावहारिक पहलु भी होते हैं।

भारतीय संस्कृति के आधार पर व्यावहारिक मनोविज्ञान को भारतीय शास्त्रों एवं उपनिषदों में भी देखा जा सकता है। भारतीय विचारधारा के आधार पर समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय चिन्तन जिससे समस्या समाधान सुगमता व सहजता से हो सके। यह सर्व धर्म सम्भाव की नीति से सम्बन्धित है तथा उन सभी सिद्धांतों तथा आदर्शों का मिश्रण है। जो विभिन्न शास्त्रों में उल्लेखित है। शोधों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गीता में लिखित सिद्धांत प्रबन्धन के क्षेत्र में व्यावहारिक तथा सफल सिद्ध हो रहे हैं।

मनोविज्ञान का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग

व्यावहारिक मनोविज्ञान कई प्रकार की शाखाओं एवं क्षेत्रों में कार्यरत है, जो कि निम्नांकित हैः–

1. **नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)**
2. **सामुदायिक मनोविज्ञान (Community Psychology)**
3. **परामर्श मनोविज्ञान (Counselling Psychology)**
4. **शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology)**
5. **औद्योगिक एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान (Industrial & Organizational Psychology)**
6. **सैन्य मनोविज्ञान (Military Psychology)**

उपर्युक्त सभी शाखाओं का वर्णन निम्नांकित हैः

1.नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) : मनोविज्ञान की सबसे प्रचलित एवं प्रयुक्त शाखा, नैदानिक मनोविज्ञान है। नैदानिक मनोवैज्ञानिक का कार्य समस्या से ग्रसित लोगों को ठीक करना है ताकि वे अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में समायोजन स्थापित कर सकें। शोध (Research), निदान (Diagnosis) और उपचार (Treatment) नैदानिक मनोवैज्ञानिक के तीन मुख्य कार्य है– जिनकी विभिन्न विधियों के माध्यम से मानसिक रोगों का उपचार किया जा सकता है। नैदानिक मुल्यांकन करने

हेतु नैदानिक मनोवैज्ञानिक कई तरह के निदान सूचक प्रविधियों (Diagnostic Tools) का विस्तृत क्षैत्र के बाद भी इनका अधिक ध्यान मनोवैज्ञानिक समस्याओं के उपचार में ही केन्द्रित होता है। इसके कई सक्रिय क्षेत्र हैं जैसे विश्वविद्यालय, उपचारगृह (Clinic), मानसिक अस्पताल आदि।

प्रायः नैदानिक मनोविज्ञान और मनोरोगविज्ञानी (Psychiatry) में संभ्रांति (Confusion) उत्पन्न हो जाती है क्योंकि दोनों ही क्षेत्र रोगियों को चिकित्सा प्रदान करते हैं। इन क्षेत्रों में चिकित्सा के दौरान मनोवैज्ञानिक रोगों की विकृतियों के विभिन्न लक्षणों को दूर किया जाता है। दोनों क्षेत्रों में सिर्फ यही अन्तर है कि मनोरोगविज्ञानी (Psychiatrists) मानसिक रोगों की चिकित्सा के समय जैविक विधियों (Biological Methods) का उपयोग करते है, जबकि नैदानिक मनोवैज्ञानी (Clinical Psychology) चिकित्सा के समय जैविक विधियों का उपयोग नहीं करते है। अपितु व्यावहारिक पद्धति की अनुपालना कर संवेगात्मक रचना कराते है।

2. **सामुदायिक मनोविज्ञान (Community Psychology)-** सामुदायिक मनोविज्ञान का तात्पर्य ऐसे मनोविज्ञान के क्षेत्र से है जो सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक नियमों, विचारों और तथ्यों का उपयोग करते है और इसी के साथ व्यक्ति को अपने कार्य और समूह में समायोजन करने में मदद करते हैं। अर्थात् सामुदायिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध उस पर्यावरण परिस्थिति से होता है, जिसमें व्यवहारात्मक क्षुब्धता (Behavioral Disturbance) उत्पन्न हो सकती है, ना कि मनश्चिकित्सा (Psychotherapy) और मनोनिदान (Psychodiagnosis) से होता है। सामुदायिक मनोविज्ञानी का अधिक विश्वास पर्यावरण में परिवर्तन ला कर समस्या को दूर करने में होता है। उदाहरण स्वरुप– स्कूल के संगठन तथा प्रशासन में परिवर्तन, पूरे समाज के बच्चों और किशोरों के अन्तः क्रिया शैली में परिवर्तन आदि ऐसे कई उदाहरण है जिनकी मदद से मनोवैज्ञानिक व्यक्ति विशेश के व्यवहार में परिवर्तन की अपेक्षा सामान्य पर्यावरण में परिवर्तन कर समस्या की गम्भीरता को कम करने हेतु प्रयास करते है। सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य आन्दोलन (Community Mental Health Movement) का एक विशेश भाग सामुदायिक मनोवैज्ञानियों को माना जाता है। ऐसे सामुदायिक मनोवैज्ञानी जो सामुदायिक समस्याओं (Community Problems) के अध्ययन पर मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन से अधिक ध्यान देते है उन्हें सामाजिक समस्या सामुदायिक मनोवैज्ञानी (Social Problem Community Psychologist) कहते है। इनकी अधिक रुचि समुदाय के समूहों में विद्वेश, पुलिस और समुदाय के बीच खराब सम्बन्ध और रोजगार के अवसरों में कमी के कारण हो रही पीड़ा आदि के अध्ययन में होती है।

3. **परामर्श मनोविज्ञान (Counselling Psychology)** : परामर्श मनोवैज्ञानी का कार्य क्षेत्र नैदानिक मनोवैज्ञानी के कार्यक्षेत्र से काफी समान है। परन्तु अन्तर सिर्फ इतना है कि व्यक्ति के साधारण सांवैगिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं को दूर करने का प्रयास परामर्श मनोविज्ञान के तहत् होता है जबकि नैदानिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत अधिक जटिल एवं कठिन समस्याओं को दूर किया जाता है। अर्थात सामान्य व्यक्तियों को ही समायोजन क्षमता को मजबूत करने में परामर्श मनोविज्ञान अहम् भूमिका निभाता है। यह व्यक्ति की कमजोरियों और गुणों को दर्शाता है और इस कार्य हेतु मनोवैज्ञानिक परीक्षणों (Psychological Test) का उपयोग किया जाता है। परामर्श मनोविज्ञान के कुछ प्रमुख क्षेत्र यह भी है कि इससे मनोविज्ञान के छात्रों को उनकी उपलब्धियों में समायोजन करना सिखाते हैं, छात्र के भविश्य के जीवनवृति (Career) को लेकर योजना तैयार करने एवँ सक्रिय रुप से काम में लाने में भी अहम् भूमिका निभाते हैं।

4. **शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology)**– सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य और परामर्श मनोविज्ञानी सम्बंधित कार्य है शिक्षा मनोवैज्ञानिक का कार्य मुख्यतः प्राथमिक तथा माध्यमिक वर्ग के स्कूलों में शिक्षा मनोविज्ञानी कार्य करते है और जरुरत के दौरान वे छात्रों को उपचार हेतु अन्य

विशेशज्ञों के पास भी भेजते है। स्कूल में व्यावसायिक और शैक्षणिक परीक्षण में सेवा प्रदान करना और साथ ही साथ ऐसे परामर्श और प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training Programme) को आयोजित करते है जो शिक्षकों को और छात्रों को एक दूसरे के साथ संगठित रखते है और प्रशासन की समस्याओं को भी हल करने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा नये प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन भी शिक्षा मनोवैज्ञानी की मदद से किया जा सकता है। अन्य उदाहरण जो इसकी उपयोगिता को दर्शाते है जैसे–शिक्षकों या छात्रों के मनोबल का अध्ययन करना, गैरकानूनी औशध उपयोग के कारणों का पता लगाकर उसका निदान ढूंढना और औशध उपयोग करने के तरीके को परिवर्तित करना आदि। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षालय के मध्य समन्वय स्थापित कर शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास की पहल करता है। बच्चे अलग–अलग विद्या को अपनाना चाहते हैं।

5. औद्योगिक एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान (Industrial & Organizational Psychology)-: मनोवैज्ञानिक नियमों और सिद्धांतो का उपयोग उद्योग क्षेत्र में भी किया जाता है। उद्योग में कर्मचारियों के मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन करना और उनका समाधान ढूंढने का प्रयास औद्योगिक मनोविज्ञान के तहत् किया जाता है। इस मनोविज्ञान के संबंध के अध्ययन में कर्मचारियों एवं कार्यों के विभाजन, कार्मिक चयन, (Presumed Selection) कार्य मूल्यांकन, (Job Appraisal) कार्य मनोवृत्ति, (Job Attitude) कार्य के भौतिक वातावरण (Physical Environment of Work) आदि पहलुओं का ध्यान रखा जाता है। कर्मचारी के चयन और स्थान निर्धारण में भी औद्योगिक मनोविज्ञानी, मनोवैज्ञानिक परीक्षणों और साक्षात्कार का उपयोग किया जाता है। इसमें कर्मचारियों और वरिष्ठ प्रबन्धकों (Senior Manager) के लिए अलग–अलग तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training Programme) आयोजित होते हैं ताकि उनके तकनीकी कौशल (Technical Skill) को उन्नत किया जा सके, मनोबल को बढ़ाया जा सके और समूह तनाव को भी कम किया जा सके। कम्पनी में उत्पादकता को बढ़ाने के लिए ये लोग कुछ परिवर्तनों का प्रस्ताव रखते है और साथ ही वे कम्पनी को एक मानव संगठन (Human Organisation) भी समझते है। इस क्षेत्र में कर्मचारियों और मशीनों की डिजाइन के बीच सामंजस्य पर भी ध्यान दिया जाता है, इसे अभियांत्रिक मनोविज्ञान (Engineering Psychology) या मानव अभियांत्रिकी (Human Engineering) कहते हैं।

औद्योगिक मनोविज्ञान का एक नवीनतम और विकसित रुप संगठनात्मक मनोविज्ञान है जिसकी प्रमुख अभिरुचि उद्योग के अलावा अन्य कई संगठनों के कर्मचारियों की कार्य सम्बन्धित एवं मानवीय समस्याओं के अध्ययन करने में होती है। स्कूल, सरकारी दफ्तरों, बैंक आदि इसके उदाहरण है।

6. सैन्य मनोविज्ञान (Military Psychology):– सैन्य क्षेत्रों में इस मनोविज्ञान के नियमों एवं सिद्धान्तों का उपयोग होता है। मनोविज्ञान के सिद्धन्तों और तथ्यों का उपयोग पहली बार अमेरिकन सैन्य बलों में किया गया था। भारतीय सैन्य बलों में मनोविज्ञान का उपयोग द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से किया जा रहा है और इसके द्वारा भारत सरकार द्वारा रक्षा मंत्रालय के तहत् साइकोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस रिसर्च (Psychological Institute of Defense Researches) नाम की एक विशेष संस्था खोली गई है। मुख्यतय इस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिकों का कार्य क्षेत्र में पाँच गतिविधियाँ सम्मिलित है;

a. रक्षा कर्मचारियों का विभिन्न स्तर पर चयन।
b. कर्मियों में विशेश कार्यक्रम द्वारा नेतृत्व गुणों (Leadership Qualities) को विकसित करना।
c. कर्मियों में सुरक्षा कौशलों (Defense Skills) के विकास हेतु विशेष परीक्षण कार्यक्रमों को विकसित करना।
d. विशेष कार्यक्रमों की मदद से सैन्य बलों में मनोबल विकसित करना।
e. अधिक ऊंचे स्थानों में उचित व्यवहार करने संबंधी सैनिकों की समस्याएं चिन्ता और तनाव आदि कुछ विशेष समस्याओं का अध्ययन करना।

मनोविज्ञान के अन्य क्षेत्र – मनोविज्ञान में लगातार हो रहे विकास के साथ इसके कार्यक्षेत्र में भी नयी और नवीन विशिश्टताओं का प्रवेश हो रहा है। इसके फलस्वरुप मनोविज्ञान में कुछ नयी शाखाएं सम्मिलित हो रही है, जो इस प्रकार हैः

- पर्यावरणीय मनोविज्ञान (Environmental Psychology)
- स्वास्थ्य मनोविज्ञान (Health Psychology)
- सुधारात्मक मनोविज्ञान (Correctional Psychology)
- वायुदिक् मनोविज्ञान (Aerospace Psychology)
- न्यायिक मनोविज्ञान (Forensic Psychology)
- खेल–कूद का मनोविज्ञान (Sports Psychology)
- राजनीतिक मनोविज्ञान (Political Psychology)
- जरामनोविज्ञान (Geriartic Psychology)
- सांस्कृतिक मनोविज्ञान (Cultural Psychology)
- महिलाओं का मनोविज्ञान (Women's Psychology)
- आर्थिक मनोविज्ञान (Economic Psychology)
- यातायात एवं परिवहन मनोविज्ञान (Traffic & Transport Psychology)

उपर्युक्त सभी शाखाओं को वर्णित किया गया हैः–

1. **पर्यावरणीय मनोविज्ञानः** पर्यावरण एवं उसके व्यवहार में आने वाले प्रभावों का अध्ययन इस शाखा में होता है। स्कूल, घर, आवाज, प्रदूषण मौसम, भीड़–भाड़ आदि पर्यावरण के कुछ पहलू है जिनका व्यवहार पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है और पर्यावरणी मनोविज्ञान के द्वारा इन प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। पर्यावरण मनोविज्ञानी में मनोवैज्ञानिक अपने विशेष अध्ययन के द्वारा पर्यावरण के कीमती खजानों को बचाने के लिए, पर्यावरण के दोषपूर्ण पहलुओं से मानव को बचाने के लिए और उनके जीवन के गुणों या विशेषताओं को उन्नत बनाने के लिए कोशिश करते है।

2. **स्वास्थ्य मनोविज्ञानः** मनोविज्ञान का यह क्षेत्र स्वास्थ्य पर विशेषकर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करता है। अर्थात् स्वास्थ्य और उसे प्रभावित करने वाले विचरों के बीच संबन्ध को जानना स्वास्थ्य मनोविज्ञान में सम्मिलित होता है। इस क्षेत्र में यह अध्ययन किया जाता है कि तनाव और चिंता की हृदय रोग, कैंसर आदि में क्या और कितनी भूमिका होती है। इसी के साथ इसमें डॉक्टर–रोगी के संबन्ध, अस्पताल का पर्यावरण, उपलब्ध सुविधायें, रोगियों की प्रतिक्रियाएं आदि का अध्ययन भी किया जाता है।

3. **सुधारात्मक मनोविज्ञानः** जिन मानव व्यवहारों का संबन्ध सामाजिक नियम और कानून के उल्लंघन से होता है, उनका अध्ययन मनोविज्ञान की शाखा में किया जाता है। मनोवैज्ञानिक तथ्यों और विधियों द्वारा मनुश्य के ऐसे व्यवहारों को सुधारने का प्रयास किया जाता है। अतः यह मनोविज्ञान जेल के पर्यावरण और न्यायिक कोर्ट के वातावरण से संबन्धित होता है।

4. **वायुदि्क मनोविज्ञानः** इस शाखा में दि्क में ऊंचाई पर कार्यरत होने वाले व्यक्ति के व्यवहार के परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। अधिक ऊंचाई पर होने के कारण व्यक्ति को अलग तरह के मौसम एवं भिन्न–भिन्न पर्यावरणों का सामना करना पड़ता है और यह परिस्थिति व्यक्ति के व्यवहार को उस पर्यावरण के साथ समायोजित होने में समस्या होती है। इस मनोविज्ञान का अध्ययन इन समस्यात्मक पहलुओं और उनके यथोचित समाधान पर होता है।

5. न्यायिक मनोविज्ञान– पुराने समय से मनोविज्ञान और कानून संबन्धित रहे है। इस शाखा के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक इन दोनों के बीच संबन्धों का अध्ययन करते है। इसमें मनोवैज्ञानिक निदान की अहम् भूमिका होती है। क्योंकि यह व्यक्ति पर मुकदमा चलाने व न चलाने के निर्णय को निर्धारित करता है। जेल के भीतर मनोवैज्ञानिकों के कार्य एक चिकित्सक, पुनर्वास विशेषज्ञ आदि के रुप में होते है। मनोवैज्ञानिक व्यक्ति की जटिल इच्छाओं और अभिप्रेरणाओं को ठीक ढंग से समझकर पुलिस विभाग की मदद करते है। दूसरी ओर जटिल न्यायिक निर्णयों के विपरित मनोवैज्ञानिक शोधों का उपयोग ज्यादा सफलतापूर्वक किया जाता है।

6. खेल–कूद का मनोविज्ञान– मनोवैज्ञानिक तथ्य एवं सिद्धांत, खेल–कूद के क्षेत्र में भी उपयोग किए जाते है। इस क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों के कुछ विशेष समस्याओं के अध्ययन में खेल–कूद में अधिक अभिरुचि वाले व्यक्ति, खेल–कूद से संबन्धित जोखिम व्यवहार को करने वाले व्यक्ति, खेल–खेलने वाले और खेल देखने वाले व्यक्ति के अभिप्रेरकों में अंतर आदि सम्मिलित होते है। मनोवैज्ञानिकों के गहन अध्ययनों द्वारा यह स्पश्ट हुआ है कि व्यक्ति की संगठनात्मक क्षमता को मजबूत बनाने हेतु खेल–कूद व्यवहार की अहम् भूमिका होती है।

7. राजनीति मनोविज्ञान– मनोविज्ञान की इस क्षमता में राजनीतिक नेताओं और अधिकारियों तथा सामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों के बीच संबन्धों को ज्ञात कर उनका अध्ययन किया जाता है। इसमें मनोवैज्ञानिकों द्वारा राजनीतिक संबन्धों से जुड़ी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। शाखा में इन छुपी हुई मानव अभिप्रेरणाओं और इच्छाओं का अध्ययन होता है जो–राजनैतिक नेतृत्व, प्रभावशाली राजनैतिक रणनीतियाँ, राजनैतिक विद्रोह, दलबदली आदि से जुड़ी है।

8 जरा मनोविज्ञान– वृद्ध लोगों के मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन हेतु मनोविज्ञान की इस शाखा को आज से 30 वर्ष पूर्व विकसित किया गया था। इस क्षेत्र में वृद्ध व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य के मूल्यांकन और उपचार की विधियां, वयस्क व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य के मूल्यांकन और उपचार की विधियों से कितनी भिन्न और कितनी समान होती है, इस पर विशेष रुप से अध्ययन होता है। इसमें व्यक्ति को आयु बढ़ने के साथ–साथ उसके मनोवैज्ञानिक कार्यों सामाजिक–आर्थिक स्तर, समूह सम्बन्ध, व्यक्तिगत एवं प्रजाजनी इतिहास पर जो प्रभाव पड़ता है, उसका भी अध्ययन किया जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययनों में सुविधा को ध्यान में रखते हुए वृद्धावस्था को तीन भागों में बांटा है– कमसीन–वृद्ध 65 से 74 वर्ष की आयु के लोग, वृद्ध 75 से 85 वर्ष की आयु के लोग और पूरा वृद्ध 85 वर्ष से ऊपर की आयु के लोग। व्यक्ति की तैथिक आयु और कार्यात्मक आयु में स्पष्ट अंतर भी जरा मनोविज्ञान में किया जाता है। व्यक्ति के जन्म से लेकर आज तक के समय को तैथिक आयु कहा जाता है और इस शाखा द्वारा आयु को कार्यात्मक क्षमताओं का सही सूचक नहीं माना जाता है क्योंकि कुछ कम तैथिक आयु वाले व्यक्तियों की कार्यात्मक क्षमता अच्छी नहीं होती जबकि कुछ अधिक तैथिक आयु वाले व्यक्तियों में उत्तम कार्यक्षमता पाई जाती है। बिरेन तथा कन्निघम के अध्ययनों के अनुसार कार्यात्मक आयु द्वारा उम्र प्रभाव के तीन पहलुओं को प्रतिबिम्बित किया गया है– जैविक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलू।

व्यक्ति के सामान्य जीवन अवधि के सन्दर्भ में उसके वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु 'जैविक बुद्धि' का प्रयोग होता है। जैविक आयु का पता लगाने के लिए चिकित्सक व्यक्ति के अंगो की आत्म नियन्त्रण क्षमता का आकलन करते है यह आयु कम होने लगती है एवं वह मृत्यु के करीब पंहुचने लगता है। समाज के दूसरे व्यक्तियों की तुलना में एक व्यक्ति की आदत, भूमिकाएं और संबन्धित व्यवहार का पता सामाजिक आयु से ज्ञात होता है। व्यक्ति के सामाजिक आयु का पता उसकी पौशाक, भाषा और अन्तर्वैयक्तिक शैली से ज्ञात होता है। परिवर्तित वातावरण में व्यक्ति के समायोजन करने की क्षमता को मनोवैज्ञानिक आयु कहा जाता है। व्यक्ति के सकारात्मक कार्य, अभिप्रेरण और

आत्म–सम्मान का प्रभाव आयु पर अधिक पड़ता है।

9. सांस्कृतिक मनोविज्ञान– मनोविज्ञान की इस शाखा से तात्पर्य व्यक्ति के चिंतन व्यवहार और संवेग आदि को समझने में संस्कृति की भूमिका की व्याख्या करना है। विभिन्न संस्कृतियों के मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं की तुलना करते हुए सांस्कृतिक मनोवैज्ञानिक, अमुक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया किसी विशेष संस्कृति या सभी संस्कृतियों में होने के मूल उद्धेश्य को पूरा करते हैं। सांस्कृतिक तुलनाओं में शोध को बढ़ावा देने और मनोविज्ञान में संस्कृति की भूमिका से अवगत कराने में भी इन्टरनेशनल एसोसिएशन फॉर क्रास कल्चरल साईकोलोजी की भूमिका अहम् होती है।

10. महिलाओं का मनोविज्ञान– मनोविज्ञान के इस क्षेत्र में उन महत्वाकांक्षाओं पर बल डाला जाता है जो महिलाओं के अध्ययन और उनके शोध को उन्नत बनाते है इस व्याख्या के अन्तर्गत महिलाओं के बारे में जो सूचनाएं प्राप्त होती है, उनका समाज और संस्थान में उपयोग कराने के लिए एक विश्वास के साथ समन्वित किया जाता है। 1973 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ में महिलाओं के मनोविज्ञान के लिए एक अलग डिविज़न बनाया गया था।

11. आर्थिक मनोविज्ञान– मनोविज्ञान के इस क्षेत्र में आर्थिक व्यवहार पूर्ववर्ती कारकों और उनके परिणामों के बारे में पूर्वकथन करने का प्रयास किया जाता है। इस क्षेत्र में अध्ययन करते समय, व्यक्ति का अर्थव्यवस्था पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है, जीवन के गुणवत्ता एवं कल्याण से सम्बन्धित चीजों के बारे में निर्णय लेते समय कौन सी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार में सम्मिलित होती है आदि बातों पर प्रकाश डाला जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार तीन प्रकार की प्रक्रियाओं के अध्ययन पर बल डाला जाता है जो निम्नांकित हैः–

- उपभोक्ताओं, उत्पादनकर्ताओं और अन्य नागरिकों के पीछे छिपे अन्य कारकों को पहचानना जैसे विश्वास, मूल्य, पसंद, मनोवृत्ति, उद्देश्य आदि।
- उपभोक्ताओं, उत्पादनकर्ताओं और नागरिकों के द्वारा उनके आर्थिक व्यवहार का दूरदर्शिता, निर्णय और सरकारी नियम आदि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।
- उपभोक्ता, नागरिकों और उत्पादनकर्ताओं के लक्ष्यों और आर्थिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि का अध्ययन किया जाता है।

मनोविज्ञानी उपर्युक्त अध्ययनों को प्राप्त करने के लिए परिमाणात्मक आंकड़ें और गुणात्मक आंकड़े दोनों का संग्रहण करते है। परिमाणात्मक आंकड़ों को ज्ञात करने के लिए प्रश्नावली, सर्वे, व्यवहार रेटिंग्स, शब्दार्थ विभेदक आदि का उपयोग होता है, और गुणात्मक आंकड़ों को ज्ञात करने के लिए साक्षात्कार, सामूहिक चर्चा, प्रक्षेपी प्रविधि, शब्द साहचर्य परीक्षणों आदि का उपयोग होता है। जिसके पश्चात्, उनका विश्लेषण कर किसी अन्तिम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

12. यातायात एवं परिवहन मनोविज्ञान– यातायात तथा परिवहन में लगे व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अध्ययन इस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है। इसमें अन्य बातों के अलावा कई पहलुओं पर अधिक बल डाला गया है जैसे दुर्घटनाओं पर रोकथाम, चालन निष्पादन की प्रभावशीलता आदि। इस तरह के लक्ष्य को पूरा करने के लिए पेशेवर चालकों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण किया जाता है। दुनिया का एक मात्र देश है स्पेन जहां पेशेवर चालकों को, चालान लाइसेंस देने या पुराने चालान लाइसेंस का पुर्नचलन करने में व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक परीक्षण से गुजरना अनिवार्य है। इस क्षेत्र में यातायात सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव जैसे थकान, सांवेगिक अवस्था, उनींदायन अल्कोहल एवं तम्बाकू उपयोग औशध व्यसन आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

अध्ययनों के आधार पर मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र को काफी विकसित और विस्तरित माना गया है। जीवन के विभिन्न स्त्रोंतों में बढ़ती हुई मनोविज्ञान की उपयोगिताओं को ध्यान में रखते हुए यह आशा की

जा सकती है कि आने वाले दिनों में मनोविज्ञान ओर भी नयी–नयी शाखाओं में प्रवेश करेगा अर्थात् इसके कार्यक्षेत्र विस्तृत होंगें।

उपर्युक्त बिन्दुओं से यह भी स्पष्ट हुआ है कि मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत है। जो यह संकेत प्रदान कर रहा है कि अलग–अलग क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि अलग–अलग जगहों एवं संस्थानों में भी मनोवैज्ञानिक कार्यरत है।

व्यावहारिक मनोविज्ञान के क्षेत्र– व्यावहारिक मनोविज्ञान आधुनिक क्षेत्र में नियमित रुप से अग्रसर हो रहा है। व्यावहारिक मनोविज्ञान उस प्रत्येक क्षेत्र में हैं जहां मानव जीवन में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग किया जा सकता है। अर्थात व्यावहारिक मनोविज्ञान एक बड़ा व्यापक और विस्तृत क्षेत्र है जिसे कई मुख्य भागों में बांटा गया है– मानसिक, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, विज्ञापन, सामाजिक समस्याएं, क्रीडा या खेल क्षेत्र, शिक्षा, यौन शिक्षा, परामर्श तथा निर्देशन, विश्व शान्ति उद्योग एवं व्यापार, राजनैतिक क्षेत्र, सेवाओं या नौकरियों में चुनाव, सैनिक क्षेत्र, अपराध निरोध आदि। दिये गये क्षेत्रों में कुछ क्षेत्रों का वर्णन निम्नांकित हैः–

शैक्षिक मनोविज्ञान या शिक्षा मनोविज्ञान मानव शैक्षिक वातावरण में किस प्रकार सिखता है और किस प्रकार शैक्षणिक क्रियाकलाप अधिक प्रभावी बनाये जा सकते है, इस बात का अध्ययन मनोविज्ञान की जिस शाखा में होता है उसे शैक्षिक मनोविज्ञान कहते है।

परिभाषाएं– स्कीनर ने बताया कि शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक परिस्थितियों में मानवीय व्यवहार का अध्ययन करता है।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या शिक्षा मनोविज्ञान में होती है।

जेम्स ड्रेवर ने बताया कि शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के प्रयोग के साथ–साथ शिक्षा की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से सम्बन्धित शाखा को मनोविज्ञान कहा जाता हैं

शिक्षा मनोविज्ञान अर्थ–

शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान के सिद्धांतों के प्रयोग को शिक्षा मनोविज्ञान कहा जाता है। स्कीनर के अनुसार ''शिक्षा मनोविज्ञान उन खोजों को शैक्षिक परिस्थितियों में प्रयोग करता है जो कि विशेषतया, प्राणियों के अनुभव और व्यवहार से सम्बन्धित है।''

शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों का योग है–शिक्षा एवं मनोविज्ञान जिसका शाब्दिक अर्थ है शिक्षा से सम्बन्धित मनोविज्ञान अर्थात् यह मनोविज्ञान का व्यवहारिक रुप होने के साथ–साथ वह विज्ञान भी है जो शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की आवश्यकताएं–

शिक्षा की समस्याओं का विवेचन, विश्लेषण और समाधान करने वाले विधायक विज्ञान को शिक्षा मनोविज्ञान कहते हैं। शिक्षा एवं मनोविज्ञान कभी पृथक नहीं रहे। मनोविज्ञान ने दर्शन के रुप में रहते हुए भी शिक्षा को माध्यम बनाकर व्यक्ति के विकास में सहायता की है।

- कॉलेसनिक के अनुसार मनोविज्ञान और शिक्षा के सर्वप्रथम व्यवस्थित सिद्धांतों में एक सिद्धांत प्लेटो का भी था।
- मनोविज्ञान के आरम्भ को प्लेटो के शिष्य अरस्तु के समय से मानते हुए कोलेसनिक के विपरित स्कीनर ने यह लिखा कि ''शिक्षा मनोविज्ञान का आरम्भ अरस्तु के समय से माना जा सकता है पर शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति यूरोप में पेस्त्रला जी, हरबर्ट और फ्रोबेल के कार्यों से हुई जिन्होने शिक्षा को मनोविज्ञान बनाने का प्रयास किया।''

- स्कीनर के शब्दों में ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बन्ध पढ़ने व सीखने से है।''

मनोविज्ञान का शिक्षा में योगदान

1. बालक का महत्त्व
2. बालकों की विभिन्न अवस्थाओं का महत्त्व
3. बालकों की रुचियों व मूल प्रवृत्तियों का महत्त्व
4. बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का महत्त्व
5. पाठ्यक्रम में सुधार
6. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं पर बल
7. सीखने के प्रक्रिया में उन्नति
8. मूल्यांकन की नई विधियां
9. शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति व सफलता
10. नये ज्ञान का आधारपूर्ण ज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां–

शिक्षा मनोविज्ञान व्यवहारिक विज्ञान की श्रेणी में सम्मिलित होने लगा है। इसके अध्ययन में अनेक वैज्ञानिक विधियो का उपयोग किया जाता है, अतः यह भी एक विज्ञान हैं।

जार्ज ए लुण्डबर्ग के अनुसार ''सामाजिक वैज्ञानिकों में यह विश्वास पूर्ण हो गया है कि उनके सामने जो समस्या है उनको हल करने के लिए सामाजिक घटनाओं के निष्पक्ष एवं व्यवस्थित निरीक्षण, सत्यापन तथा विश्लेषण का प्रयोग करना होगा। ठोस एवं सफल होने के कारण ऐसे दृष्टिकोण को वैज्ञानिक पद्धति कहा जाता है।''

अध्ययन एवं अनुसंधान हेतु शिक्षा मनोविज्ञानिक में जिन विधियों का प्रयोग होता है उन्हें मुख्य रुप से दो भागों में बांटा गया है।

❖ आत्मनिष्ठ विधियां
- –आत्मनिरीक्षण विधि
- –गाथा वर्णन विधि

❖ वस्तुनिष्ठ विधियां
- –प्रयोगात्मक विधि
- –जीवन इतिहास विधि
- –विकासात्मक विधि
- –तुलनात्मक विधि
- –परीक्षण विधि
- –प्रश्नावली विधि
- –मनोभौतिकी विधि
- –निरीक्षण विधि
- –उपचारात्मक विधि
- –मनोविश्लेषण विधि
- –सांख्यिकी विधि
- –साक्षात्कार विधि
- –विवेदात्मक विधि

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र–

शिक्षा मनोविज्ञान को विभिन्न लेखकों ने विभिन्न परिभाषाओं के साथ परिभाषित किया है और इस वजह से इस क्षेत्र के सन्दर्भ में निश्चित रुप से कोई तर्क नहीं दिया जा सकता है। इन बिन्दुओं के अलावा यह क्षेत्र एक नया और पनपता विज्ञान माना जाता है। इसमें अनिश्चित क्षेत्र व गुप्त धारणा है। वर्तमान में इन क्षेत्रों में गहन अध्ययन और खोज हो रहे हैं और सम्भवतः शीघ्र ही शिक्षा मनोविज्ञान की नई धारणाएं, नियम और सिद्धांत प्राप्त हो जाऐंगे। उपर्युक्त तथ्यों से यह भाव पता चलता है कि शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनिश्चित और परिवर्तनशील समस्या है।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का सम्बन्ध सीखने को प्रभावित करने वाली दशाओं से है। उपर्युक्त सभी बिन्दुओं के उपरान्त कुछ निम्नलिखित क्षेत्र या समस्याएं हैं जिन्हें शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र में शामिल किया जा सकता है।

1. व्यवहार की समस्या
2. व्यक्तिगत विभिन्नताओं की समस्या
3. विकास की अवस्थाएं
4. बालक के विकास अध्ययन
5. सीखने की क्रियाओं का अध्ययन
6. व्यक्तित्त्व तथा बुद्धि
7. मापन तथा मूल्यांकन
8. निर्देशन तथा मूल्यांकन
9. निर्देशन तथा परामर्श

सम्प्रेषण मनोविज्ञान (Communication Psychology)

किसी भी प्रकार के उत्पादन हेतु संयुक्त प्रयास आवश्यक होते हैं। उत्पादन करने हेतु एकजुटता भी महत्वपूर्ण है। इन सभी के बावजूद भी कार्यभार लेने वालों के बीच अगर सम्पर्क ना हो तो कोई भी समुदाय सफल संयुक्त कार्य नहीं कर सकता। किसी भी कार्य में संयुक्त सक्रियता होने के लिए सम्प्रेषण के सम्बन्ध होना आवश्यक है। सम्प्रेषण की परिभाषा कुछ इस प्रकार है कि ''सम्प्रेषण लोगों के बीच सम्पर्क स्थापित व विकसित करने की एक जटिल प्रक्रिया हैं, जिसकी जड़े संयुक्त रुप से काम करने की आवश्यता में होती हैं।''

सम्प्रेषण का अर्थ है किसी विचार या सन्देश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रेषित करने वाले के द्वारा भेजना तथा प्राप्त करने वाले के द्वारा प्राप्त करना। सम्प्रेषण तभी सफल होगा जब सम्प्रेषण कर्ता तथा प्राप्त कर्ता दोनों सहयोगात्मक प्रक्रिया में भाग लें। यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें विचारों का स्पष्ट रुप से आदान प्रदान होता है।

सम्प्रेषण के उद्धेश्य–

- समूह को सम्बोधित करने के कौशल का विकास।
- समूह को विषय वस्तु से स्पष्ट या सरल ढंग से परिचित कराना।
- सम्प्रेषण सामग्री को बोधगम्य बनाना।
- प्राप्तकर्ता को सम्प्रेषण सामग्री ग्रहण करने हेतु अभिप्रेरित करना।

सम्प्रेषण के अन्तर्गत संयुक्त रुप से सक्रिय व्यक्तियों के बीच जानकारी का आदान–प्रदान शामिल रहता है। जिसे प्रक्रिया का संसूचनात्मक पहलु भी कहा जाता है। 'भाषा' सम्प्रेषण का एक प्रमुख साधन है जिसके माध्यम से लोग परस्पर सम्पर्क में रहते हैं। संयुक्त कार्यकलाप में भाग लेने वालों के शब्दों को नहीं बल्कि क्रियाओं का भी आदान–प्रदान का, सम्प्रेषण का दूसरा पहलु माना गया है, जैसे–ग्राहक और विक्रेता के बीच सामान की खरीद बेच होना इसमें बिना शब्दों के सम्प्रेषण होता हैं।

अंतवैयक्तिक समझ, सम्प्रेषण का तीसरा पहलू होता हैं। चीजें इस पर भी निर्भर करती हैं कि सम्प्रेषण में भाग लेने वाला एक पक्ष दूसरे पक्ष को भरोसेमंद, चतुर और जानकार मानता है या उसके बारे में अपनी सोच बुरी रखता है, उसे कम समझदार या बेवकूफ समझता है। मुख्य रुप से इसके तीन पहलू होते है– संसूचनात्मक (जानकारी का विनिमय), अन्योन्यक्रियात्मक (प्रक्रिया में भाग लेने वालों की संयुक्त सक्रियता), और प्रत्यक्षात्मक (एक दूसरे के बारे में धारणा)। इन पहलुओं के सन्दर्भ में देखने पर यह सामने आता है कि सम्प्रेषण वह धारणा है जिसमें संयुक्त सक्रियता के संगठन और उसके सहभागियों के बीच सम्बन्ध की स्थापना करता है। मुख्य रुप से सम्प्रेषण दो भागों में विभाजित है जो निम्नांकित है।

1. **शाब्दिक सम्प्रेषणः–** शाब्दिक सम्प्रेषण अर्थात भाषा की सहायता से सम्प्रेषण की प्रक्रिया को वाक् कहते हैं। शब्दों को सामाजिक अनुभव द्वारा मिश्रित अर्थ शाब्दिक सम्प्रेषण के माध्यम से दिये जाते हैं, जैसे–शब्दों को जोर से बोलना, मन में दोहराना, कागज और किसी और चीज पर लिखना, मूक–बधिरों के मामले में विशेष इशारे करना आदि। वाक् दो प्रकार के होते है–लिखित और मौखिक, जिनका पुनः विभाजन है–मौखिक वाक्; संवादात्मक (Dialogue) और एकालापात्मक (Monologue)

मौखिक वाक् का वह रुप जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति कुछ प्रश्नों पर संयुक्त रुप से चर्चा करते हैं उसे संवाद या बातचीत कहते है। मौखिक वाक् के दूसरे रुप में एक ही व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों को सम्बोधित करते हुए बोलता है, उसे एकालाप कहते है। लिखित वाक् का जन्म मानव जाति के इतिहास में बहुत बाद में हुआ एवं समय स्थान से अलग हुए लोगों के बीच सम्प्रेषण की जरुरत के कारण इसकी उत्पत्ति हुई।

2. **अशाब्दिक सम्प्रेषणः–** लोगों के बीच सम्प्रेषण, मात्र शाब्दिक सन्देशों के विनिमय से ही नहीं की जा सकती। अनिवार्यतः मानव सम्प्रेषण में जो व्यक्ति सम्मिलित होते है उनकी भावनाएं भी समाविष्ट होती हैं। अशाब्दिक सम्प्रेषण के अन्तर्गत भावनाएं शाब्दिक संदेश का अंग बनकर सूचना के विनिमय में एक विशिष्ट पहलु का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसी के साथ यह भावनाएं सन्देशों की विषय वस्तु और सम्प्रेषण के भागीदारों, से एक मिश्रित ढंग से जुड़ी होती हैं। इशारे, भंगिमाएं, लड़ना, विराम, मुद्राएं, हास्य, आंसु आदि अशाब्दिक सम्प्रेषण के कुछ साधन है जो ऐसे संकेत पद्धति पर कार्य करते हैं जिसमें शाब्दिक सम्प्रेषण के माध्यम शब्दों की अनुपूर्ति एवं कभी–कभी उनका स्थान भी ले लेते हैं। अशाब्दिक सम्प्रेषण के साधनों और शाब्दिक सन्देशों के उद्देश्यों की परस्पर अनुरुपता सम्प्रेषण की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्व है। क्योंकि एक ही शब्द अलग–अलग लहजों के साथ अलग–अलग अर्थों को दर्शाता है।

सम्प्रेषण की प्रक्रिया– सम्प्रेषण की प्रक्रिया द्विपक्षीय अथवा बहुपक्षीय होती है। दूसरों के विचारों तथा भावों के प्रभाव, पूर्व आदान–प्रदान के लिए प्रेषण स्त्रोत तथा प्राप्तकर्ता दोनों की समान एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार सूचना के आदान प्रदान का जो रुप होता है उससे सम्बन्धित तत्वों तथा उनकी भूमिका को निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैः–

1. **सम्प्रेषण स्त्रोत–** सम्प्रेषण स्त्रोत से तात्पर्य उस व्यक्ति तथा समूह विशेष से होता है जो अपनी भावनाओं तथा विचारों को किसी अन्य व्यक्ति या समूह तक पहुँचाना चाहता है।
2. **सम्प्रेषण सामग्री–** सम्प्रेषण कर्ता या स्त्रोत के द्वारा जिन विचारों भावों तथा अनुभवों के रुप में अन्य व्यक्तियों को प्रेषित किया जाता है उसे ही सम्प्रेषण सामग्री कहा जाता है।
3. **सम्प्रेषण माध्यम–** अपनी भावनाओं तथा विचारों को दूसरों तक पंहुचाने के लिए दूसरों की भावनाओं और विचारों को ग्रहण कर उनके प्रति अनुक्रिया व्यक्त करने के लिए स्त्रोत तथा प्राप्त कर्ता द्वारा जिन माध्यमों का सहारा लिया जाता है, उन्हें सम्प्रेषण माध्यम कहा जाता है।
4. **प्राप्तकर्ता –** स्त्रोत द्वारा प्रेषित सन्देश, विचार तथा भावों को जिस व्यक्ति या समूह द्वारा ग्रहण किया जाता है उसे प्राप्तकर्ता कहा जाता है।
5. **प्रतिपुष्टि (Feedback)–**प्राप्तकर्ता की अनुक्रिया को प्रतिपुष्टि कहा जाता है।

संगठन मनोविज्ञान

कर्मचारियों, कार्यस्थलों और संगठनों के वैज्ञानिक अध्ययन को संगठनात्मक मनोविज्ञान कहते है जो व्यवहारिक मनोविज्ञान की एक शाखा है। औद्योगिक मनोविज्ञानिक संस्थाओं के बेहतर प्रदर्शन में इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका मानते हैं।

संगठन मनोविज्ञान का इतिहासः– अमेरिका, लंदन, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, नीदरलैण्ड एवं अन्य यूरोपीय देशों में संगठनात्मक मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विकास हुआ था। सन् 1880 में प्रदर्शित मनोवैज्ञानिक विल्हेल्म वुन्दुथ के द्वारा प्रशिक्षित किए गये दो वैज्ञानिकों को–हुगो मुन्स्तेर्बेग और जेम्स कातेल्ल ने इस क्षेत्र के विकास में बड़ा योगदान दिया। व्यक्तिगत मतभेद, मूल्यांकन और कार्यपालन इस विषय के ऐतिहासिक उद्‌गम के आधार हैं। युद्ध के दौरान सही निर्णय लेने की आवश्यकता के कारण इस क्षेत्र को विश्व युद्ध के समय प्रमुखता मिली।

संगठनात्मक मनोविज्ञान

इस मनोविज्ञान के क्षेत्र में कई विषय हैं जो निम्नलिखित हैं;

- कार्य विश्लेषण
- कर्मचारियों की भर्ती और चयन
- प्रशिक्षण और प्रशिक्षण शैली
- कार्यस्थल में प्रेरणा

कार्य विश्लेषणः– कर्मचारियों के सफल एवं सही चुनाव और प्रदर्शन का आधार, कार्य विश्लेषण है। कार्य की व्यवस्थित और अच्छी जानकारी से नौकरी का विश्लेषण किया जा सकता है। कार्य विश्लेषण के दो प्रकार है–कार्य उन्मुख दृष्टिकोण तथा कार्यकर्ता उन्मुख दृष्टिकोण। कर्तव्यों, कार्यों और दूसरी जरुरतों को कार्य उन्मुख परीलक्षित करता है। दूसरी ओर ज्ञान, कौशल योग्यता और कई विशेषताओं को सफल करने हेतु कार्यकर्ता उन्मुख दृष्टिकोण परीलक्षित करता है। इसके डेटा को मात्रात्मक एवं गुणात्मक तरीकों से ज्ञात कर नौकरी के चयन प्रक्रियाओं में इस्तेमाल किया जाता है।

कर्मचारियों की भर्ती एवं चयनः– प्रत्येक संस्था को आगे बढने एवं सफल बनने हेतु मजदूरों एवं कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। भर्ती प्रक्रिया और व्यक्तिगत चयन की व्यवस्था को तैयार करने हेतु मनोविज्ञान संस्था के मानव संसाधन विशषज्ञों के साथ मिलकर कार्य करते हैं। बड़ी विश्लेषणाओं के बाद मनोवैज्ञानिकों ने यह जाना है कि कुल मानसिक क्षमता ही कार्य सफलता का सबसे अच्छा भविष्य वक्ता है।

प्रशिक्षण और प्रशिक्षण शैलीः– अवधारणा मनोभाव प्राप्त करने का व्यवस्थित तरीका ट्रेनिंग या प्रशिक्षण कौशल होता है जिसकी मदद से दूसरे वातावरण में भी अच्छी तरह से कार्य किया जा सकता हैं। ट्रेनिंग की मदद से नौकरी में भर्ती व नये कर्मचारियों को संस्थान के सभी कार्यों को समझाने में मदद मिलती है। नई शिक्षा प्राप्त करना या सीखना ही प्रशिक्षण प्रोग्रामों की बुनियाद होती है जिसकी मदद से कर्मचारी अपने कार्यों को अच्छी तरह से पूर्ण कर पाते हैं।

कार्यस्थल में प्रेरणाः– किसी कार्य की कौशलता और उसे सफल बनाने की प्रेरणा किसी कार्य को अच्छी तरह से निभाने के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। कार्यस्थलों में प्रेरणा बढ़ाने हेतु संगठनात्मक मनोविज्ञान का ज्ञान बहुत महत्त्वपूर्ण है और साथ ही साथ प्रेरणा व्यवहार और प्रदर्शन को आकार देने हेतु एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

क्रियाकलाप 9.1

- छात्र इस बात की विवेचना कर मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग की एक सूची तैयार करें।
- स्कूल में मनोविज्ञान के महत्त्व पर निबन्ध लिखें।
- कौनसी मनोविज्ञान तकनीकों द्वारा खिलाड़ियों के प्रदर्शन को सुधारा जा सकता है, सूचीबद्ध करें।
- आप स्वयं के लिए मनोविज्ञान कैसे महत्त्वपूर्ण है परिचर्चा करें।

क्रीड़ा या खेल मनोविज्ञान

खेल के मैदान पर मानव के व्यवहार से जुड़ी मनोविज्ञान की शाखा को खेल मनोविज्ञान कहते हैं। खेल–कूद की स्थितियाँ जैसे अभ्यास, प्रतियोगिता आदि के प्रदर्शन में गुणात्मक सुधार देखने को मिलता है। मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत खेल परिवेश में मानव व्यवहार के मानसिक पहलु के अध्ययन पर बल दिया जाता है। इस सन्दर्भ में ब्राउनी एवं माहुनी ने बताया कि खेल मनोविज्ञान सभी स्तरों पर खेलों और शारीरिक क्रियाकलापों के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का विनियोग है।

सिंगर (Singer) 1981 के अनुसार "खेल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की कई शाखाओं को समाहित किए हुए है जो खिलाड़ी के प्रदर्शन को समझने की हमारी योग्यता, इसे कैसे बेहतर बनाया जाए तथा अभ्यास के कार्यक्रम से जुड़ी है।"

खेल मनोविज्ञान में क्रेटी के अनुसार मुख्य चार उपवर्ग दिये गये हैं।

- **अनुभावनात्मक खेल मनोविज्ञान :** इसमें मैदान और अनुभावनात्मक अध्ययन से उन मनोवैज्ञानिक उतार–चढाव पर शोध होते हैं जो खिलाड़ी और उसके प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।

- **शैक्षिक खेल मनोविज्ञान :** इसमें खेल पर्यावरण, खेल प्रदर्शन और खिलाड़ियों व टीमों के अन्तर्वैयक्तिक प्रभावों से जुड़े प्रशिक्षकों, खिलाड़ियों व अन्य को शिक्षित किया जाता है।

- **क्लिनिकल खेल मनोविज्ञान :** इसका उद्देश्य मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप का उपयोग कर खिलाड़ी के प्रदर्शन में सुधार लाना है एवँ खिलाड़ियों को मनोवैज्ञानिक रुप से समस्याओं से बचाकर उसे बेहतर बनाना है।

- **विकासात्मक खेल मनोविज्ञान :** यह विभिन्न आयु वर्गों के बच्चों और युवाओं पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपना असर छोड़ने वाले मनोवैज्ञानिक अस्थिरताओं से सम्बन्धित है।

खेल मनोविज्ञान का विकास :– खेल मनोविज्ञान के पिता, कोलमैन ग्रिफिथ को कहा जाता है, जिसने खेल मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला का संगठन और निर्देशन किया जिसके अन्तर्गत सीखने, मनोगत्यात्मक (Psychomotor) दक्षता और व्यक्तित्व अस्थिरता पर विशेष रुप से ध्यान दिया गया था। तत्पश्चात् खेल मनोविज्ञान निरन्तर जारी है।

पूर्वी यूरोप में 1920 और 1930 के दशक के दौरान खेल मनोविज्ञान को एक वैज्ञानिक क्षेत्र माना गया है। 1960 के दशक के आरम्भिक दौर में अन्तर्राष्ट्रीय खेल मनोविज्ञान सोसायटी को स्थापित किया गया जो कि इस क्षेत्र का सबसे पुराना संगठन था। रोम में 1965 में इस क्षेत्र का जन्म हुआ जहां रोम ओलम्पिक खेलों के ठीक बाद पहली अन्तर्राष्ट्रीय खेल मनोविज्ञान कांग्रेस बुलायी गई। खेल मनोविज्ञान की लोकप्रियता 1980 के दशक से बढ गई और इसके फलस्वरुप कई देशों में अन्तर्राष्ट्रीय सोसायटियों की स्थापना की गई।

खेल मनोविज्ञान में प्रगति को डानी लैडर्स ने तीन अवस्थाओं में बांटा;

पहले पड़ाव (1950–1965) में खिलाड़ी का व्यक्तित्व का प्रदर्शन किस प्रकार सम्बन्धित है । इस पर जोर दिया गया।

दूसरे पड़ाव (1966–1976) में मनोविज्ञान के पूर्व प्रचलित सिद्धांतों को ग्रहण करने और उनका खेल व्यवस्था में परीक्षण करने पर जोर दिया है।

तीसरे पड़ाव (1977 से अब तक) का सम्बन्ध खेलों में एकत्रित सूचनाओं एवं सिद्धांतों पर केन्द्रित है। खेल प्रदर्शन में उत्कृष्टता लाने के लिए मनोवैज्ञानिक दक्षता और रणनीति को विकसित करने से है।

खिलाड़ियों के प्रदर्शन में सुधार हेतु मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरणात्मक अनुशंशाए

1. प्रेरक उद्‌बोधन– प्रशिक्षण के दौरान किसी स्पर्धा के पूर्व प्रेरणीय उद्‌बोधन से खिलाड़ियों के प्रदर्शन में वांछित सुधार लाया जा सकता है।

2.सफल खिलाड़ियों से अर्न्तक्रिया– प्रतिभावान खिलाड़ियों के उसी खेल के सफल/प्रसिद्ध खिलाड़ियों से अर्न्तक्रिया उन्हें नयी ऊर्जा प्रदान करती है, जो अन्ततः सफल प्रदर्शन में परिवर्तित होती है।

3. मानसिक प्रशिक्षण– खेल के प्रशिक्षण के साथ–साथ खिलाड़ियों को मानसिक प्रशिक्षण भी दिया जाना आवश्यक है ताकि मैच के दौरान होने वाले मनोवैज्ञानिक दबाव को न्यूनतम किया जा सके।

4. मानसिक सन्तुलन– मानसिक प्रशिक्षण में मुख्यतः मानसिक सन्तुलन रखना सिखाया जाना आवश्यक है जिससे अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ें।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. व्यावहारिक मनोविज्ञान के प्रयोग द्वारा समस्या समाधान सुगम होता है।
2. व्यावहारिक मनोविज्ञान,सैद्धांतिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक पक्षों पर अधिक बल देता है।
3. मनोवैज्ञानिक का अनुप्रयोग नैदानिक, सामुदायिक, परामर्श, स्कूल, औद्योगिक, संगठनात्मक तथा सैन्य क्षेत्रों में बढ़ा है।
4. पर्यावरण, स्वास्थ्य, सुधारात्मक, वायुदिक्, न्यायिक, खेल–कूद, राजनीति, जरा, सांस्कृतिक, महिला, आर्थिक, यातायात तथा परिवहन आदि क्षेत्रों में व्यावहारिक मनोविज्ञान की उपादेयता परिलक्षित हुई है।
5. शिक्षा, सम्प्रेषण, संगठन तथा खेलों में व्यावहारिक मनोविज्ञान के प्रचलन एवं उपयोग में अभिवृद्धि हुई है।

अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कार्य विश्लेषण पूर्णतः सम्बन्धित है
   (अ) शिक्षा मनोविज्ञान (ब) सम्प्रेषण
   (स) संगठन (द) खेल मनोविज्ञान
2. सीखने के अनुभवों की व्याख्या होती है
   (अ) शिक्षा मनोविज्ञान (ब) सम्प्रेषण
   (स) संगठन (द) खेल मनोविज्ञान
3. सम्प्रेषण के पहलु हैं
   (अ)संसूचनात्मक (ब) अन्योन्यक्रियात्मक
   (स) प्रत्यक्षात्मक (द)उपरोक्त सभी
4. खेल मनोविज्ञान के पिता कहा जाता हैं
   (अ) बुन्ट (ब) रोजर्स
   (स) कोलमेन ग्रिफिथ (द) सिंगर
5. वृद्ध व्यक्तियों के मनोविज्ञान को कहा जाता है
   (अ) सामान्य (ब) दिक्
   (स) जरा (द) नैदानिक

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. व्यावहारिक मनोविज्ञान का अर्थ बताइये।
2. शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ बताइये।
3. सम्प्रेषण मनोविज्ञान का अर्थ बताइये।
4. किन क्षेत्रों में मनोविज्ञान का उपयोग किया जाता है ?

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

1. शैक्षिक मनोविज्ञान पर एक टिप्पणी लिखिए।
2. संप्रेषण में मनोविज्ञान के महत्व को प्रतिपादित कीजिए।
3. संगठन में किस प्रकार मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों की आवश्यकता है, बताइये।
4. एक सफल खिलाड़ी हेतु मनोविज्ञान किस प्रकार सहायक है, समझाइये।
5. मनोविज्ञान का विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग बताइये।

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. (स) 2. (अ) 3. (द) 4.(स) 5. (स)